Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 667–674

HINDI WRITING ON NORTHEAST: IN THE CONTEXT OF TRIBAL SOCIETY

पूर्वोत्तर विषयक हिन्दी लेखन: आदिवासी समाज के सन्दर्भ में

Pooja Srivastava [1], Manoj Kumar Singh [2]

[1] Research Student, Hindi Department, Maharishi University of Information Technology, Lucknow
[2] Assistant Professor, Hindi Department, Maharishi University of Information Technology, Lucknow

ABSTRACT

English: This study attempts to understand the writings being written in Hindi on the Northeast. The Northeast seems to be almost absent in Hindi literature under Hindi writing. In the long history of Hindi literature, there are very few writings on the Northeast. In the modern era, some travelogues, memoirs, stories, novels, etc. have been written on the Northeast. Apart from these, some poems have also been written on the Northeast. Some important novels have been written, in which most of the writers do not belong to the tribal society here. But in their novels, the society of the Northeast has appeared with its diversity. Among these writers are Devendra Satyarthi's 'Brahmaputra', Krishnachandra Sharma's 'Bhikkhu', 'Raktyatra', Shri Prakash Mishra's 'Where the Bamboos Flower', 'Rupatilli Ki Katha' and Mahendranath Dubey's 'Mukti', Lal Bahadur Verma's 'North-East', Shridhar Pandey's 'Aahuti', and Joram Yalam Nabam's 'Jungli Phool' etc. Similarly, in the category of travelogues, there are some important works, which include Agyeya's 'Hey Yaayavar Rahega Yaad', Mridula Garg's 'Kuch Atke Kuch Bhatke', Asghar Wajahat's 'Raste Ki Talash Mein', Anil Yadav's 'Wah Bhi Koi Desh Hai Maharaj', Sawarmal Sanganeria's 'On the Land of Arunodaya' and 'Brahmaputra Ke Kinare'. Some important writers have also written stories, among which Agyeya's 'Jaidol' and Nabam's 'Sakshi Hai Peepal' are some. Works related to the Northeast have been written in other genres as well. Shriprakash Mishra's 'Words on Silence', 'Words with Fine Taarons', 'Words are Poems' and 'Miamad' are poetry collections.

Hindi: पूर्वोत्तर को लेकर हिन्दी में लिखी जा रही रचनाओं को इस अध्ययन में जानने-समझने की चेष्टा की गयी है। हिन्दी लेखन के अंतर्गत हिन्दी साहित्य में पूर्वोत्तर लगभग अनुपस्थित सा दिखाई देता है। हिन्दी साहित्य के लम्बे इतिहास में पूर्वोत्तर विषयक रचनाएँ अत्यंत कम हैं। आधुनिक काल में पूर्वोत्तर को लेकर कुछ यात्रावृत्तांत, संस्मरण, कहानी, उपन्यास आदि लिखे गए हैं। इनके अतिरिक्त पूर्वोत्तर को लेकर कुछ कविताएँ भी लिखी गई हैं। कुछ ऐसे महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे गए हैं, जिनमें अधिकांश लेखक यहाँ के आदिवासी समाज से संबंधित नहीं हैं। लेकिन उनके उपन्यासों में पूर्वोत्तर का समाज अपने वैविध्य के साथ उपस्थित हुआ है। इन लेखकों में देवेन्द्र सत्यार्थी का 'ब्रह्मपुत्र', कृष्णचन्द्र शर्मा का 'भिक्खु','रक्तयात्रा', श्री प्रकाश मिश्र के 'जहाँ बाँस फूलते हैं', 'रूपतिल्ली की कथा' तथा महेद्रनाथ दुबे का 'मुक्ति', लालबहादुर वर्मा का 'उत्तर-पूर्व', श्रीधर पाण्डेय का 'आहुति', तथा जोराम यालाम नाबाम का 'जंगली फूल' आदि है । इसी प्रकार यात्रावृत्तांत की श्रेणी में कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जिनमें अज्ञेय का 'अरे यायावर रहेगा याद', मृदुला गर्ग का कुछ अटके कुछ भटके', असगर वजाहत का 'रास्ते की तलाश में, अनिल यादव का 'वह भी कोई देश है महाराज', सावरमल सांगानेरिया का 'अरुणोदय की धरती पर ' तथा 'ब्रह्मपुत्र के किनारे-किनारे ' है । कुछ जोराम यालाम महत्वपूर्ण लेखकों ने कहानी की भी रचना की है, जिसमें से अज्ञेय का 'जयदोल', नाबाम का 'साक्षी है पीपल' है । अन्य विधाओं में भी पूर्वोत्तर से संबंधित रचनाएँ लिखी गई हैं। श्रीप्रकाश मिश्र का मौन पर शब्द, शब्द के बारीक तारों से', 'शब्द संभावनाएँ हैं' तथा 'मिअमाड' कविता संग्रह हैं।

Keywords: Hindi Writing, Tribal Society, Hindi Literature, हिन्दी लेखन, आदिवासी समाज, हिन्दी साहित्य

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.2005

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

पूर्वोत्तर भारत के विषय में कहना गलत नहीं होगा कि पूर्वोत्तरक्षेत्र एक ऐसे फूल के समान है जिसके बगैर भारत रूपी गुलदस्ते की कल्पना ही नहीं की जा सकती। अपनी सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता के लिए पूर्वोत्तर पूरे भारत में जाना जाता है। कई भाषाओं में यहाँ के जीवन-मूल्यों को आधार बनाकर साहित्य का निर्माण हुआ है। कहने का अभिप्राय यह है कि कई भाषाओं के लेखकों ने यहाँ के जन-जीवन को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। यहाँ के मूल बाशिंदों की जिंदगियों को अपने साहित्य का माध्यम बनाया है। लेकिन यदि हिंदी साहित्य के इतिहास को उलट-पलटकर देखते हैं तो हमें स्थिति ठीक नजर नहीं आती। आशय है कि हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर को लेकर एक उदासीनता का भाव दिखाई देता है।

जिसके कारण हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर का रेखांकन काफ़ी कम मात्रा में पाया जाता है। लेकिन आज हिंदी साहित्य में विभिन्न विमर्शों के उत्पन्न होने के कारण पूर्वोत्तर को लेकर जिज्ञासा का उदय जरूर हुआ है। यह समझने का प्रयास किया जा रहा है कि पूर्वोत्तर कैसा है? वहाँ की जिंदगी की क्या विशेषताएँ एवं समस्याएँ हैं? कुछ यहाँ के मूल लोग और कुछ बाहरी लोग पूर्वोत्तर के विषय में हिंदी भाषा में सृजन कर रहे हैं। असम, अरुणाचल, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम और मेघालय में सृजनात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। हिंदी भाषा और साहित्य में पूर्वोत्तर एवं वहाँ की जिंदगी से जुड़े तमाम अध्यायों को विषय बनाकर कुछ श्यात्रा वृतांत, संस्मरण, कहानी, कविता, उपन्यास आदि लिखे गये हैं।

अभी तक जो कुछ भी लिखा गया है उसको देखकर यह कहना ठीक होगा कि पूर्वोत्तर को लेकर अधिकतर रचनाएँ गैर-पूर्वोत्तर के रचनाकारों ने की है। नीचे हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर संबंधी रचनाओं को उनके विधागत स्वरूप में विश्लेषित किया जा रहा है।

2. पूर्वोत्तर की जनजातियों की सामाजिक स्थिति

भारत के विषय में कहा जाता है कि यह देश विविधताओं का देश है। जहाँ पर भिन्न बोलीए भाषा, जाति, धर्म व सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। सभी वर्गों की संस्कृति और रहन- सहन अलग हैं। भारत की भूमि इन सभी विविधताओं को समेटे हुए सहअस्तित्व की जीवन-शैली को लेकर चल रही है। यहाँ का समाज इतना समावेशी है कि भिन्न-भिन्न समय पर आए बाहरी लोगों को इसने अपने भीतर समायोजित कर लिया । आज यह पहचान करना मुश्किल है कि कौन व्यक्ति शक, हूण या कुषाण आदि आक्रमणकारियों का वंशज है। सभी का खून यहाँ की मिट्टी में रच-बस गया है। इन सब से परे जब हम पूर्वोत्तर के समाज पर दृष्टि डालते हैं तो अलग ही परिदृश्य दिखाई देता है । इस परिदृश्य को देखने लिए समाज निर्माण के तत्त्वों पर संक्षिप्त प्रकाश डालना जरूरी है। दरअसल यही तत्त्व किसी भी समाज को नियंत्रित एवं परिचालित करते हैं।

किसी भी समाज का निर्माण उसमें रहने वाले लोगों से होता है। जिसमें लोग अपनी आवश्यकताओं के लिए एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित करते हैं। समाज के अंतर्गत सुरक्षा का भाव भी निहित होता है। मेकिवर ने समाज की परिभाषा करते हुए इसको संबंधों का ताना-बाना अथवा जाल माना है। समाज में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति भिन्न-भिन्न संबंधों के आधार पर एक- दूसरे से जुड़े हुए हैं।

परिवार एक ऐसी व्यवस्था है जो लगभग हर समाज में अपना अस्तित्व रखती है। परिवार के लिए आवश्यक है कि स्त्री-पुरुष किसी एक व्यवस्था से आपस में जुड़ें। विवाह एक ऐसी संस्थापक व्यवस्था है जो परिवार की स्थापना या निर्माण करती है। परिवार किसी भी समाज की प्रारंभिक इकाई के रूप में होता है। विवाह प्रत्येक समाज की एक अनिवार्यता है। समाजशास्त्रियों का मानना है कि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त तरीके से स्त्री-पुरुष की यौन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिएए उसे एक संस्थागत ढंग से नियंत्रित करने एवं परिवार को स्थायी रूप देने के लिए विवाह का प्रारंभ हुआ।

भारत एवं पश्चिम के देशों में विवाह के अंतर्गत एक-दूसरे में पर्याप्त भिन्नता है। पश्चिम में प्रायः विवाह को एक ऐसा बंधन माना जाता है जिसका उद्देश्य मुख्यतः यौन संबंधों की पूर्ति करना है। जबकि भारत में विवाह एक धार्मिक बंधन या संस्कार है। लेकिन वहीं जनजातियों में विवाह को लेकर कुछ अलग मान्यताएँ

हैं। एम. एम. लवानिया कहते हैं कि ष्भारतीय संस्कृति के प्रतिमानों के अनुसार विवाह से पूर्व लड़के-लड़कियों का यौन संबंध अमान्य है जबकि संसार की अनेक ऐसी जातियाँ एवं जनजातियाँ हैं जिनमें ऐसे प्रतिबंध नहीं हैं ।

निःसंदेह विवाह वह प्राथमिक क्रिया है जिससे परिवार और समाज का निर्माण होता है। विवाह के अभाव में कोई ऐसी विकसित व्यवस्था नहीं है, जिसके बल पर परिवार और समाज को स्वस्थ ढंग से संचालित किया जा सके । विवाह को मुख्यतः दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। पहला एक विवाह व्यवस्था तथा दूसरा बहु- हू-विवाह व्यवस्था। एक विवाह व्यवस्था के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति एक समय में एक ही जीवन साथी चुन सकता है। आदिवासी समाज के विषय में यह कहा जाता है कि इनके यहाँ एक विवाह व्यवस्था नहीं है। जबकि कुछ विद्वान मानते हैं कि भारतीय जनजातियों का अधिकांश हिस्सा एक विवाह प्रथा का पालन करता है । इस कथन के समर्थन में नदीम हसनैन के वक्तव्यों को सामने रखा जा सकता है। वे कमार जनजाति का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि श्इस विवाद का खंडन करने के लिए अधिकांश पिछड़ी तथा आदिम जनजातियों में विवाह की कोई निश्चित योजना नहीं पायी जाती, कमार (मध्य प्रदेश) जैसी अनेक अत्यंत पिछड़ी जनजातियों का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। ऐसी अनेक जनजातियाँ एक विवाही हैं।

जनजातियों में एक विवाह व्यवस्था देखने के लिए आपातानी जनजाति का अध्ययन किया जा सकता है। यह जनजाति अरुणाचल प्रदेश की सुबनसिरी जिले में पायी जाती है। इसमें अभी भी प्रागैतिहासिक कालीन सभ्यता की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है। ये जनजाति जिस घाटी में निवास करती है। उसे आपातानी घाटी के रूप में जाना जाता है। इनके साथ विवाह संबंध स्थापित करना अमान्य है। बहुविवाह व्यवस्था एक विवाह व्यवस्था के विपरीत विवाह व्यवस्था है। इसमें एक पुरुष या स्त्री का अधिक स्त्रियों या पुरुषों के साथ विवाह होता है। इस प्रकार के विवाह को भी अनेक प्रकार से बाँटा जा सकता है। पहला बहु पत्नी विवाह व्यवस्था तथा दूसरा बहु पति विवाह व्यवस्था।

बहु पत्नी विवाह का अभिप्राय यह है कि जहाँ एक पुरुष की एक से अधिक स्त्रियाँ होती हैं और उस पुरुष का विवाह सभी स्त्रियों से हुआ होता है। ऐसी व्यवस्था असम की जनजातियों में देखी जा सकती है। इस जनजाति के मुखिया अनेक स्त्रियों से विवाह करते हैं। उनका एक से अधिक स्त्रियों को रखना आर्थिक सम्पन्नता और सम्मान का प्रतीक समझा जाता है। भारत में नागागोंडए बैगा आदि जनजातियों में बहु-पत्नी विवाह व्यवस्था प्रचलित है। ठीक ऐसे ही बहु पति विवाह वह विवाह व्यवस्था है जिसमें एक स्त्री का दो या अधिक पुरुषों से विवाह होता है। टोडाए खाशाए नेयरए तिआन आदि जनजातियों में विवाह की यह प्रथा प्रचलित है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि परिवार समाज की वह प्रथम इकाई है जिसमें कुछ मनुष्य मिलकर रहते हैं। इस इकाई में पतिए पत्नी और उनकी संतानें होती है। परिवार का आकार छोटा और बड़ा दोनों होता है। परिवार का स्वरूप चाहे जैसा भी हो यह निश्चित रूप से एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसके अंतर्गत विशेष रूप से स्त्री.पुरुष के सामाजिक मान्यता प्राप्त यौन संबंध स्थापित रहतेहैं । मैकाइवर एवं पेज का मत है कि ष्परिवार एक ऐसा समूह है जो निश्चित यौन संबंधों पर आधारित है और इतना छोटा और शक्तिशाली है कि संतान के जन्म और पालन-पोषण की व्यवस्था करने की क्षमता रखता है।

3. पूर्वोत्तर विषयक रचनाएँ

यह बात सत्य है कि मनुष्य स्वभाव से ही यायावर होता है। उसका स्वभाव घुम्मकड़ किस्म का रहा है। राहुल सांकृत्यायन ने घुम्मकड़ी को धर्म का दर्जा दिया है। उनका मानना है कि मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुम्मकड़ी । घुम्मकड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता है। [1]

सामान्यत: कहा भी जाता है कि यात्राएँ मनुष्य को सहज बनाती हैं। जीवन को जीना सिखाती हैं। विभिन्न समाजों से मेल कराती हैं। जीवन के सार को बताती हैं। इसलिए सभी को यात्राएँ करनी चाहिए । इन्हीं सब बातों को समेटकर रचनाकारों ने यात्राएँ लिखी हैं। हिंदी के कुछ प्रमुख यात्रा वृत्तांत इस प्रकार हैं, अरे यायावर रहेगा यादए कुछ अटके कुछ भटकेए अरुणोदय की धरती परए रास्ते की तलाश में, वह भी कोई देश है महाराज, ब्रह्मपुत्र के किनारे-किनारे।

पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य में जन जीवन की प्रकृति एवं वन्य जीवों के बीच सहज संबंधों को देखा जा सकता है। प्रकृति एवं वन्य जीव को जन जीवन से जोड़कर देखते हुए अज्ञेय ने लिखा है कि जिसने वह नहीं देखाए वह नहीं मानेगा कि संस्कृत वाक्यों में कदली वन में विचरते हाथियों का वर्णन मिलता है, वह अक्षरतः सत्य हो सकता है। जंगली ही सहीए केले के इतने बड़े जंगल की दो घंटे मोटर दौड़ा कर भी पार न हो.... और उनकी चिकनी गहरी हरी छाँहों में कहीं हाथियों के झुण्ड और कहीं बड़ी शालीनता से घूमते मिथुन..... मिथुन अरना भैंसा ही होता हैए किंतु अरने भैंसे से कहीं अधिक गठे शरीर वाली और फुर्तीलीवन्य जातियाँ सभी मिथुन को पूज्य मानती हैंए कुछ जातियाँ अपने को मिथुन- कुलोत्पन्न बताती हैं और मिथुन को अपना पूर्वज मानकर पूजती हैं । कहीं कहीं मादा मिथुन पालते भी हैं।

अनिल यादव अपनी प्रसिद्ध पुस्तक श्वह भी कोई देश है महाराजश् में मेघालय की खासी महिलाओं के विषय में लिखते हैं कि खासी महिलाओं को पूर्वोत्तर में सर्वाधिक व्यापार चतुर माना जाता है । लेकिन इस क्षेत्र के सबसे बड़े धार्मिक खासी बाजार यूडो (बड़ा बाजार) में गैर- मंगोल चेहरे वाले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। खरीद- फरोख्त की भाषा बिहारी टोन की हिंदी श्केतनाठु पिसा हो चुकी है।

अरुणाचल प्रदेश के विषय में लेखिका निरुपमा कहती हैं ष्अरुणाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है जिसके विभिन्न क्षेत्रों की वेश-भूषाए भाषाए धर्मए सामाजिक जन जीवन तथा कला संस्कृति पर उसके सीमावर्ती क्षेत्रों का प्रभाव है। राज्य के उत्तरी क्षेत्र पर तिब्बतए पूर्वी क्षेत्र पर बर्मा तथा दक्षिण क्षेत्र पर असमी सभ्यता तथा संस्कृति का प्रभाव है। एक बात जो सर्वव्यापक है । वह है वहाँ की कला। राज्य की अधिकांश सभी जातियाँ, जनजातियाँबेतों पर सुंदर नक्काशी का कार्य करने में निपुण हैं । यहाँ की महिलाएँ भी शिल्प एवं बुनाई कला में प्राकृतिक तथा पौराणिक दृश्यों को उकेरने में कुशल हैं।

नागालैंड के त्यौहार के बहाने वहाँ की लोक संस्कृति को दिखाने का प्रयास करती हुई निरुपमाने लिखा है कि नागा लोगों द्वारा मनाये जाने वाले त्यौहारों में से कोंयी, मोमात्सु, तुलुनी, तोक्कूएमोंग प्रमुख हैं। नागा आदिवासियों का सबसे लोकप्रिय नृत्य है श्नाग नृत्यश् जो त्यौहारों के अवसर पर किया जाता है। नागा लोग अपने नृत्य को श्लिमश् कहते हैं व नागा नृत्य वीर रस से भरा उत्तेजना युक्त नृत्य है । इन नृत्यों में युद्ध कलाओं का प्रदर्शन करते हुए नाग नर्तक अपने सिर पर लंबे पट्टे अथवा सींगों का मुकुट पहनकर भालों के साथ नृत्य करते हैं। [5]

पूर्वोत्तर भारत के अन्य राज्य मणिपुर के आर्थिक जीवन के बारे में जगमल सिंह लिखते हैं कि ष्औद्योगिक उत्पादन कृषिए वन संपदा तथा खनिज संपदा पर निर्भर करते हैं। मणिपुर की भूमि उर्वर हैए वन संपदा बहुतायत में है और पर्वत श्रृंखलाएँ खनिज भंडार युक्त हैं किंतु इन सब बातों के होते हुए भी मणिपुर में औद्योगिकरण संभव नहीं हो सका है । यहाँ लगभग 4% जनसंख्या ही उद्योग में काम करती है। जिसमें 3.5% गृह उद्योगों में कार्यरत हैं। मणिपुर की भौगौलिक स्थिति उबड़.खाबड़ धरातलए दुर्गम मार्गए यातायात एवं परिवर्तन के साधनों की सुविधा का अभावए तकनीकी जानकारी का अभावए छोटा स्थानीय बाजार तथा पूँजी का अभाव आदि मणिपुर के औद्योगीकरण के मार्ग में बाधक तत्त्व है।[6]

असगर वजाहत मिजोरम के बौद्धों के विषय में लिखते हैं कि ष्मिजोरम के बौद्ध चेरावंद शाखा के अनुयायी हैं जो हिंदू विश्वासों और एनिमिज्म दर्शन के सिद्धांतों का सम्मिश्रण है। स्थानीय लोग मंदिर को निर्वाण शुक मंदिर के नाम से जानते हैं। मंदिर के दोनों तरफ़ भिक्षुओं के रहने की व्यवस्था है। इनका जीवन इतना सादा और सरल लगा कि ईर्ष्या होने लगी। लगा कि वे इस छोटे से पहाड़ को पूरा संसार मान बैठे हैं। यहाँ जो उगता है वह खाते हैं यहाँ जो हवा आती है उससे साँस लेते हैं और अपने जीवन को विश्वासों के अनुसार जीते हैं। ऐसी जगहें संसार में कम ही बची होंगी जहाँ धर्मए राजनीति और व्यवसाय के साथ न जुड़ गया हो।[7]

मृदुलागर्ग अपने यात्रा वृत्तांत श्कुछ अटके कुछ भटकेश् में सिक्किम के विषय में लिखती हैं कि ष्ढाबे की मालकिन ने मेजपोश में पोशीदा मिट्टी के तेल की सिगड़ी जला रखी थी । खूब इसरार के साथ हमें वहाँ बिठलाया गया था । नीचे आँच ऊपर भाँप उठाती आँच से उतरी ताजा सुनहले सेला चावल की ताहरी । चामू सरोवर देवभातमाजा जाता है। उसके आस.पास केवल शाकाहारी भोजन मिलता है।[8] प्रस्तुत पंक्तिओं के माध्यम से सिक्किमी महिलाओं की मेहमान नवाजी को दिखाया गया है।

पूर्वोत्तर विषयक हिंदी साहित्य लेखन में संस्मरण की उपलब्धता न के बराबर है। इस विधा में रचनाकारों को कार्य करने की बहुत आवश्यकता है। चूँकि संस्मरण एक ऐसी विधा है जिसमें स्मृतियों को

फिर से जीवित किया जाता है। इसलिए आज जरूरत है कि भाग-दौड़ भरी जिंदगी में उन स्मृतियों को जिन्दा किया जाए जो व्यक्ति को साहस दे सकेए सुकून दे सके।

हिंदी कहानियों में पूर्वोत्तर भारत को चित्रित करने का सबसे सफल प्रयास अज्ञेय ने किया। इनका नाम अग्रणीय लेखकों में आता है। पूर्वोत्तर भारत पर लिखी गयी उनकी कहानियों के अंतर्गत श्हीलिबोन की बत्तखेंश्ए नाग पर्वत की एक घटना एवं जयदोल आदि कहानियों को देखा जा सकता है। हीलिबोन की बत्तखें नामक कहानी में हीलिबोन के पारिवारिक वातावरण को कहानीकार ने अप्रत्यक्ष रूप से चित्रित किया है। हीलिबोन अपने घर में अकेली है। उसके एकाकीपन ने हीलिबोन के मन में एक अलग ही रूप दिया है । इस विशेष मानसिकता का दर्शन एक विशेष घटना एवं वातावरण में होता है। जब उसकी बत्तखों की हत्या करने वाले का शिकार (लोमड़ी) को कैप्टन दयाल मारता है।

उस निर्दयी शिकारी अर्थात् लोमड़ी को देखने के लिए उत्सुक होकर दोनों निकलते हैं। उन्होंने ऐसा दृश्य देखा कि ष्करारे में मिट्टी खोद कर बनायी हुई खोह में या कि खोह की देहरी पर नर लोमड़ी का प्राण हीन आकार दुबका पड़ा था कास के फूल की झाड़ू सी पूंछ उस की रानों को ढंक रही थी जहाँ गोली का जख्म होगा। भीतर शिथिल . गात लोमड़ी उस शव पर झुकी खड़ी थीए शव के सिर के पास मुँह किये मानों उसे चाटना चाहती हो और फिर सहम कर रुक जाती है। लोमड़ी के पांवों से उलझते हुए तीन छोटे.छोटे बच्चे कुनमुना रहे थे। उस कुनमुनाने में भूख की आतुरता नहीं थीए न वे बच्चे लोमड़ी के पेट के नीचे घुसड़-पुसड़ करते हुए भी उसके थनों को ही खोज रहे थे। माँ और बच्चों में किसी को ध्यान नहीं था कि गैर और दुश्मन की आँखें उस गोपन घरेलू दृश्य को देख रही हैं। [9]

उस परिवार का स्नेह और दर्द देखकर वह अपने एकाकीपन की व्यथा को नियंत्रित करने में असमर्थ होकर उन्माद की अवस्था में अपनी उन बत्तखों की स्वयं ही हत्या कर देती है जिनसे उसे अत्यंत प्रेम था और जिनके सौंदर्य को देखकर वह गर्व से फूली नहीं समाती थी। स्पष्ट है कि हीली की अवस्था और विक्षिप्त व्यवहार का कारण उसके परिवार का वातावरण ही है।

पूर्वोत्तर पर हिंदी कविता में लेखन कार्य अल्प मात्रा में हुआ है। हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद के पुरस्कर्ता अज्ञेय को शिलांग के प्राकृतिक सौंदर्य ने काफ़ी आकर्षित किया था। उन्होंने अपनी कई कविताओं की रचना यहीं पर की थी । इन्होंने आशी रू वीर बहु 1944, देखती है पीठ 1945 ई., पासव प्रातः शिलांग, दूर्वादल 1947 ई., जैसी कई कविताएँ शिलांग में ही लिखीं। दूर्वादल कविता की पंक्तियों के अंतर्गत शिलांग का परिवेश दिखाई देता है। ऐसे वर्णित करते हैं।

"पार्श्व गिरि का वृक्षए चीड़ों में डगर चढ़ती उमंगों सी।
बिछी पैरों में नदी ज्यों दरद की रेखा
विहाग-शिशु मौन नीड़ों में।
मैंने आँख पर देखा
दिया मन को दिलासा-पुनः आऊँगा।
(भले ही बरसए दिन. गमगीन युगों के बाद)
क्षितिज ने पलक-सी खोली
तमक कर दामिनी बोली
अरे यायावर! रहेगा याद" [10],

प्रो. माधवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय द्वारा रचित कविता संग्रह खुब्लेईशिबुनचीड़वन के अंतर्गत पचपन कविताएँ संकलित हैं । जहाँ खुब्लेईशिबुनचीड़वन शीर्षक खासी भाषा का शब्द है । जिसका अर्थ होता है श्बहुत-बहुत धन्यवाद अर्थात् हमारा मेघालय के चीड़वन के प्रति बहुत-बहुत धन्यवाद। प्रस्तुत काव्य संकलन के अंतर्गत पूर्वोत्तर के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। जहाँ ष्पर्वतोंए झरनों, नदियों, झीलों एवं संस्कृति की सुंदरता को प्रमुख रूप से महसूस किया जा सकता है। साथ ही यहाँ के लोगों की ईमानदारीए सच्चाईए कोमलताए मिठास अगर मानव मूल्य है तो वे केवल इसी क्षेत्र में देखे जा सकते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"सुंदर देखने का सुख सबसे बड़ा सुख,

इतना कि आपको
बना सकता आदमी,
आदमी बनने से बड़ा
कोई दूसरा सुख नहीं होता,
पल दो पल ही सही,
आदमी होना
कायनात की सबसे खूबसूरत
वादियों में शामिल होना है,
पल दो पल ही सहीए हम फूल बन जाते,
फल बन जातेए बीज की अनंत संभावना को थामेवृक्ष बन जाते,
वृक्ष बन जाना सुंदर बनने की पराकाष्ठा है।

हिंदी भाषा में पूर्वोत्तर भारत को आधार बनाकर जितने भी उपन्यास लिखे गये हैं। लगभग वे सभी उपन्यास कमोवेश ऐतिहासिक हैं । पूर्वोत्तर से सम्बन्धित सबसे पहला उपन्यास देवेन्द्र सत्यार्थी का ब्रह्मपुत्र है । गोपाल राय ने अपनी पुस्तक हिंदी उपन्यास का इतिहास में इसकी प्रकाशन तिथि सन् 1956 दर्ज की है। यह दौर हिंदी उपन्यास लेखन में आंचलिक उपन्यास लेखन का दौर था । आंचलिकता के प्रति वैचारिक निष्ठा और लोक जीवन से अनुराग ने इस उपन्यास को अनूठी कृति के रूप में प्रस्तुत किया । इस उपन्यास में कथा का समय भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समय है और स्थान ब्रह्मपुत्र और माजुली द्वीप तथा उसके सामने का भू-भाग है।

प्राकृतिक आपदाओं की विभीषिकाओंके बावजूद मनुष्य की जिजीविषा के बीच होने वाला संघर्ष ही उपन्यास की मुख्य कथावस्तु है । रचनाकार ने इस संघर्ष कासजीव चित्रण किया है । उपन्यास के कथानुसार स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद दिशांत भूख में नागालैंड की रानी गीडालू आती है। रानी गीडालू स्वतंत्र भारत में पूर्वोत्तर भारत के लोगों के सम्मान की गारंटी को उभारने का कार्य करती है । पूर्वोत्तर पर लिखे हिंदी उपन्यासों में यह उपन्यास वहाँ की जन जीवन की गहरी समझ प्रस्तुत करता है ।

इसी क्रम में दूसरा उपन्यास श्जहाँ बाँस फूलते हैंश् आया इसके लेखक श्री प्रकाश मिश्र हैं । लेखक नेकई वर्षों तक मिजोरम में खूफ़िया प्रमुख के रूप में कार्य किया है। उसी अनुभव के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है। उपन्यास का कथा समय सन् 1968 का लालडेंगा का प्रसिद्ध विद्रोह है। एक जगह विस्तार से उपन्यासकार ने अपने अनुभव के आधार पर पूर्वोत्तर भारत की समस्या जिसे निहित स्वार्थ के चलते समस्या बनाया गया-का भांडा-फोड़ किया है। उपन्यास के अंत में रुमाल्खुमा की डायरी मिलती है । जिसमें उसकी आठ कविताएँ होती हैं, मिजोरम के दुर्भाग्य और लहूलुहान यथार्थ पर आँसू बहाती ।

अगला तीसरा उपन्यास मुक्ति 1999 ई. में प्रकाशित हुआ । इसके लेखक महेन्द्रनाथ दूबे हैं । इसउपन्यास के जरिये डॉ दूबे शेष भारत के साथ पूर्वोत्तर भारत के जुड़ाव पर विशेष जोर देते हैं। इसलिए लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलाई के निधन और जवाहर लाल नेहरू के देहावसान पर उपन्यास के पात्र गुहाटी और दिल्ली चले जाते हैं । महात्मा गाँधी का निध भी भारी क्षति के साथ उभरकर सामने आता है। चौथा उपन्यास श्उत्तरपूर्वश् सन् 2002 में प्रकाशित हुआ ।

4. पूर्वोत्तर भारत की अन्य गद्य विधाएँ

पूर्वोत्तर भारत की अन्यत्र विधाओं के अंतर्गत केवल निबंध और पत्रकारिता के संबंध में ही सूचनाएँ उपलब्ध हैं। हिंदी निबंध विधा में पूर्वोत्तर का संबंध आते ही आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की परंपरा के निबंधकार कुबेरनाथ राय के निबंधों की याद बरबस आ जाती है द्य उनके लगभग सभी निबंध संग्रहों में पूर्वोत्तरभारत के संदर्भ बिखरे पड़े हैं । कुबेरनाथ राय 1956 ईण् में नलबारी (असम) में अंग्रेजी अध्यापक बनकर गये। वहीं उन्होंने अपने जीवन के 29 वर्ष बिताये । अपने प्रसिद्ध निबंध श्यह लो अंजुरी भर कामरूपश् में जापारकुची गाँव के बहाने कुबेरनाथ राय ने पूर्वोत्तर भारत की जनजातियों की लोक- संस्कृति पर प्रकाश डाला है । श्यह कथा नदी कीश् में ब्रह्मपुत्र के बहाने गंगा तिरी निषाद और ब्रह्मपुत्र तट पर बसी

किरात जाति की तुलना की गयी है। श्दृष्टि अभिषेकश् नामक निबन्ध में असम के उमानंद क्षेत्र की मनोरम नौका यात्रा का वर्णन किया गया है । श्कजरी वन वन में राजहंसश् नामक निबंध के अंतर्गत एक पिकनिक का वर्णन किया गया है। जिसमें असम प्रदेश के प्रकृति चित्रण के साथ वहाँ के परिवेश का जीता जागता रूप प्रस्तुत हुआ है।

कुबेरनाथ राय का एक रिपोर्ताज है जिसका नाम श्दृष्टि अभिसारश् है । इसका मूल विषय असमए भूटानए अरुणाचल का मिलन बिंदु भैरव कुंड है। राय जी भैरव कुंड में असमिया बंधुओं के साथ वन भोज का आनंद लेने गये थे । इसमें एक जगह असम की महत्वपूर्ण सड़क गोहाई कमल मार्ग या ग्रैंड ट्रंक रोड़ का वर्णन आया है। इनका एक रिपोर्ताज धर्मी निबंध श्यम द्वारे महा घोरेश् है। यह यमद्वार वर्तमान असमए बंगाल और भूटान की सीमा पर स्थित है । यह प्रकृति का बड़ा ही मनोहर स्थल है। इनका अगला रिपोर्ताज धर्मी निबंध है श्महाकलांतर ।

इसके अंतर्गत काजीरंगा अभ्यारण्य का वर्णन किया गया है। जिसमें नयनाभिराम सौंदर्य तथा जीव जंतु विशेषकर भारतीय एक सींग वाले गैंडे का वर्णन मिलता है । कुबेरनाथ राय के सांस्कृतिक निबंध संग्रह ष्फणों का मणिद्वीपश् में मणिपुर लोक नृत्य का वर्णन मिलता है द्य यहाँ मणिपुरी लोक जीवन से प्रभावित लोक नृत्य श्लाईहरौबाश् का अनुपम चित्रण है । इनके एक निबंध संग्रह का नाम श्उत्तर कुरुश् है। उत्तर कुरु में भारतीय दक्षिण कुरु एवं पांचाल की पितर संस्कृति का संकेत है। इसका संबंध चंद्रा वंशीय आर्यों एवं हिमालय की गंधर्व कीजर जातियों के समन्वय की कथा से है । श्आगम की नावश् और श्देवी का जलयानश् कुबेरनाथ राय का एक अन्य निबंध संग्रह है।

आगम की नाव और देवी का जलयान निबंध में आर्यों और आर्येतर संस्कृति का मूल्यांकन किया गया है। इसमें आर्य संस्कृति आगम तथा आर्येतर को निगम कहा गया है। उनका एक अन्य निबंध असमिया वैष्णव धर्म का क्रम विकास है। इसमें असम प्रान्त में वैष्णव धर्म के उद्भव और विकास पर विचार किया गया है। कुबेरनाथ राय ने अपने एक निबंध में असमिया समा में राम के विश्वास पर अपने विचार प्रकट किये हैं ।

अगर पूर्वोत्तर में हिंदी पत्रकारिता पर बात की जाए तो इसका भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। कृपाशंकर चौबे एक जगह लिखते हैं कि ष्पूर्वोत्तर में सर्वाधिक आठ सौ सैंतीस अखबार असम से निकलते हैं। मणिपुर से 258ए त्रिपुरा से 162, सिक्किम से 115, मेघालय से 110, नागालैंड एवं अरुणाचल से 25.25 अखबार निकलते हैं। यदि पूर्वोत्तर भारत में हिंदी पत्रकारिता की बात करें तो असम से हिन्दी में प्रकाशित होने वाला प्रथम पत्र श्प्रकाशश् था । वह मासिक था और उसके संपादक विश्वेश्वर शर्मा थे। यह 1919 ई. में डिब्रूगढ़ से निकला ।

सन् 1939 में पन्नालाल पुरोहित ने साप्ताहिक पत्र नवजागृति निकालीए 1947 ई. में तिनसुकिया से साप्ताहिक श्अकेलाश् निकला। जिसके संपादक विश्वनाथ गुप्त थे। उसी साल गोवाहाटी से शंकर लाल भातरा ने साप्ताहिक श्शंखनादश् का प्रकाशन किया । सूर्यवंशी चौधरी ने हिंदी व असमिया भाषा में सन् 1959 ई. में श्असम प्रदीप निकाला। 1972 ई. में हिंदी असमिया व नेपाली में श्रव ध्वनिश् नामक पत्रिका निकाली। गुवाहाटी से 1976 ई. में बसंत कुमार सिंह ने जय हिंद और 1982 ई. में शम्भू प्रसाद शर्मा ने पाक्षिक रजनीगंधा का प्रकाशन किया। साल 1986 ई. के बापचन्द्र महंत ने त्रैमासिक पत्रिका श्समन्विताश् निकाली। हिन्दीए असमिया व राजस्थानी में 1976 ई. में श्असम ज्योतिकाश् का प्रकाशन हुआ।

यदि दैनिक समाचार पत्रों की बात करें तो असम से प्रकाशित होने वाला प्रथम दैनिक श्लोकमान्यश् है जिसका प्रकाशन गुवाहाटी से 18 अप्रैल 1963 ई. को हुआ। उसके बाद जीण्एलण् अग्रवाल ने 16 मई 1989 ई. को श्पूर्वांचल प्रहरीश् निकाला । पूर्वांचलप्रहरी के निकलने के चौदह दिन बाद ही हिंदी दैनिक श्सैंटीनलश् निकलने लगा। 14 सितंबर 1989 ई. को हिन्दी दैनिक श्उत्तरकालश् निकलने लगा। सन् 1991 में पूर्वांचलप्रहरी से हिंदी साप्ताहिक श्सत्य सेतुश् भी निकलने लगा।

30 मार्चए 1996 ई. को गुवाहाटी से सांध्य दैनिक श्द ब्लास्टश् निकला। हिंदी दैनिक पूर्वोदय सन् 2005 से गोवाहाटी व जोरहाट से निकल रहा है। कुछ समय बाद वहसिलचर से भी निकलने लगा है। गुवाहाटी से हिन्दी दैनिक श्प्रातः खबरश् भी निकलता है। सिक्किम से हिन्दी दैनिक अनुगामिनी निकलता है। अरुणाचल से हिन्दी साप्ताहिक श्अरुण आवाजश् निकलता है। पूर्वोत्तर से प्रकाशित हिंदी पत्र.पत्रिकाएँ पूर्वोत्तर के साहित्य को यदा-कदा हिन्दी में अनूदित कर लाती रही हैं। किंतु सुचिंतित तरीके से हिन्दी और

पूर्वोत्तर में भाषा सेतु का काम पूर्वोत्तर की जिन पत्रिकाओं ने किया है। उनमें उलूपी, महीप और समन्वय पूर्वोत्तर का नाम सबसे आगे है।

5. उपसंहार

पूर्वोत्तर भारत पर आधारित हिंदी साहित्य परिमाण में कम है। हिंदी साहित्य के बड़े लेखकों का इस क्षेत्र को लेकर साहित्य रचने पर ध्यान कम ही गया है । पर सुखद आश्चर्य है कि अज्ञेय ने तीन यात्रावृत्त और पाँच कहानियाँ इस क्षेत्र को लेकर लिखे हैं । उनके बाद देवेंद्र सत्यार्थीए बलभद्र ठाकुर और कृष्ण चंद्र शर्मा ष्भिक्खुष् ने एक.एक उपन्यास इस क्षेत्र को केंद्र कर लिखा है । कुबेरनाथ राय ने भी कुछ निबंध इस क्षेत्र को लेकर लिखे हैं । महाभारत काल से ही पूर्वोत्तर भारत का संबंध भारत से रहा है ।

श्राह और रोड़े एक राष्ट्रभाषा प्रचारक जीवनचंद्र हाजरिका की सच्चाई, कर्मठता की कहानी है । ब्रह्मपुत्र में असम के दिसाँगमुख नामक स्थान के माध्यम से पूरे असम का जनजीवन अपने सारे रंगों के साथ चित्रित है । इस उपन्यास में देवकांत क्रांतिकारी है जो आखिर में शहीद हो जाता है। मुक्तावती में मणिपुर में अन्यायपूर्ण श्राद्ध-कर के विरुद्ध हु, संघर्ष को चित्रित किया गया है । श्जय आइ असमश् में श्असम आंदोलनश् के समय की असम की परिस्थितियों को चित्रित किया गया है । श्जहाँ बाँस फूलते हैंश् में 1966 ईण् के मिजो विद्रोह के बाद की मिजोरम की परिस्थितियों को चित्रित किया गया है । श्मुक्तिश् में साँवरी नामक एक स्त्री की त्यागपूर्ण जीवन एवं ममतामयी चरित्र को उजागर किया गया है। श्रूपतिल्ली की कथाश् दो मानव - बलि के ईर्द-गिर्द घूमती है । यह उपन्यास खासी प्रदेश में बाहरी धर्म और संस्कृति के धीरे-धीरे प्रभाव विस्तार करने की कहानी कहता है । श्उफ़्फ़श् में उल्फा की गतिविधियों और भ्रष्ट अधिकारियों का चित्रण किया गया है।

देश भीतर देश में एक हिंदी भाषी युवक और एक असमीया युवती की प्रेम कहानी के माध्यम से असम की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण है । लोहित में असम आंदोलन के समय का असम चित्रित है। सियांग के उस पार एक हिंदी भाषी युवक और एक अरुणाचली युवती की प्रेम कहानी है । में प्रागैतिहासिक काल की अरुणाचली कबीलाई जीवन का चित्रण है । मिनाम अरुणाचल की जंगली फूल गालो जनजाति की कुछ स्त्रियों की संघर्ष की कहानी है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Yadav, Anila, that too is a country, Maharaj, p. 80 Prabhakara, Vishnu, One Country, One Heart, p.63
Nirupama, States of India, p.117
Singh, Jagmala, Manipur, p. 37
Wajahat, Asghar, In search of a way, p.62,
Some have fallen, some have got stuck, some have strayed, p. 68-69
Agyeya Jayadola Pg. 48-49
Madhavendra, Shrutia, Cultural identity of the North-East, p. 15-16
Madhavendra, Khublei Shibun Chidwan, P.09
Madhavendra, Khublei Shibun Chidwan, P.28